

ॐ

श्री हनुमान चालीसा

Hanuman Chalisa

GOSWAMI TULSIDAS · 40 VERSES

DOHA

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार ॥

CHAUPAI

- ① जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
- ② राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥
- ③ महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
- ④ कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुँचित केसा ॥
- ⑤ हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे ।
काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥
- ⑥ शंकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जगवंदन ॥
- ⑦ विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
- ⑧ प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मनबसिया ॥

- 9 सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
- 10 भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र के काज सवारै ॥
- 11 लाय सजीवन लखन जियाए ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥
- 12 रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥
- 13 सहस बदन तुम्हरो जस गावै ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥
- 14 सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
- 15 जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥
- 16 तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
- 17 तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
- 18 जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लिल्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
- 19 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही ।
जलधि लाँघि गए अचरज नाही ॥
- 20 दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
- 21 राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥
- 22 सब सुख लहैं तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहु को डरना ॥

- 23) आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तै कापै ॥
- 24) भूत पिशाच निकट नहि आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥
- 25) नासै रोग हरे सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
- 26) संकट तै हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥
- 27) सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ॥
- 28) और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥
- 29) चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
- 30) साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥
- 31) अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥
- 32) राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
- 33) तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
- 34) अंतकाल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
- 35) और देवता चित्त ना धरई ।
हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
- 36) संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

- 37) जै जै जै हनुमान गुसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
- 38) जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
- 39) जो यह पढ़े हनुमान चालीसा ।
होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥
- 40) तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

DOHA

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

A free offering from hanumanashtak.in · please share, do not sell.